B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Political system in Kushan era

Prepared by : Sri Ashutosh kumar singh
Asst. Professor (Dept. of History)
B.N. College Bhagalpur
Contact (whatsApp) no- 8368156607

कुषाणकालीन राजनीतिक व्यवस्था

राजनीतिक व्यवस्था

- मौर्योत्तर काल में भारत आने वाले अंतिम विदेशी आक्रमणकारी कुषाण थे।कुषाण चीन की यूची जाति कबीले से संबंधित थे।
- कुजुल कदफिसिस कुषाण वंश का पहला शासक था जिसने प्रथम शताब्दी में यूची प्रदेश वासियों को एकीक्रत किया और साम्राज्य को बढ़ाया।
- यह भारत में कुषाण वंश का संस्थापक था।कनिष्क, जिन्हें कनिष्क प्रथम भी कहा जाता है, कुषाण वंश के महान शासक थे। इन्हें अपने समय के कुषाण शासकों में सैन्य, राजनीतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में श्रेष्ठ माना गया है।

राजनीतिक व्यवस्था

- विदेशी आक्रमणों का प्रभाव भारतीय राजनीति और शासन के कुछ तत्वों पर स्पष्टतः दिखाई देता है।
- सिकन्दर के आक्रमण के प्रभाव के संबंध में हम देख चुके हैं कि भारतीय सम्राटों को एकछत्र साम्राज्य स्थापित करने की प्रेरणा उसी से मिली तथा इसके बाद साम्राज्यिक व्यवस्था हिन्दू राज्यतंत्र का स्थायी तत्व बन गयी ।
- मौर्योत्तर काल में राजत्व का देवत्व से अविच्छिन्न संबंध स्थापित हो गया । इसके पीछे भी विदेशी प्रभाव एक बड़ा कारण था ।

राजनीतिक व्यवस्था

- कुषाण शासकों का दैवीकरण एक सुविदित तथ्य है । विम कडफिसेस के सिक्कों पर 'महेश्वर', 'सर्वलोकेश्वर' की उपाधि अंकित है ।
- मथुरा लेख में उसे 'देवपुत्र' कहा गया है। वस्तुतः दैवी राजत्व संबंधी विचारधारा पश्चिमी एशिया, ईरान तथा चीन में कुषाणों के उदय के पूर्व ही काफी लोकप्रिय थी । मनुस्मृति (ई. पू. 200-200 ई.) तक इसका स्वरूप स्थायी हो गया जो शाक-कुषाण प्रभाव ही था।
- मनु स्पष्टतः घोषणा करते हैं कि बालक राजा का भी अपमान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह मनुष्य रूप में स्थित महान देवता है । मथुरा लेख से पता चलता है कि इस समय राजाओं के लिये देवकुल का निर्माण होता था ।

राजनीतिक व्यवस्था

- कनिष्क को 'देवपुत्र' तथा गोण्डोफर्नीज़ को 'देवव्रत' कहा गया है। कालान्तर में भारतीय राजाओं ने इसका अनुकरण किया।
- प्रयाग लेख में समुद्रगुप्त को 'लोकधाम्नो देवस्य' अर्थात् पृथ्वी पर निवास करने वाला देवता कहा गया है जो लौकिक क्रियाओं के कर्त्ता के रूप में ही मनुष्य था।
- हर्ष को बाण ने 'सभी देवताओं का सम्मिलित अवतार' (सर्वदेवतावतारमिवैकत्र) कहा है।
- कुषाण शासक उच्च सम्मानपरक उपाधियां, जैसे- राजराज, राजाधिराज आदि धारण करते थे । इन्हीं के अनुकरण पर भारतीय शासक 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण करने लगे ।

राजनीतिक व्यवस्था

- कुषाण काल में हम सामन्तवाद के न केवल राजनीतिक अपितु सामाजिक-आर्थिक कारक भी देखते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में सामन्तवाद का मूलतत्व शासक- अधीनस्थ संबंध होता है और यह हमें शक-कुषाण राज्यतन्त्र में ही दिखाई देता है।
- जैन ग्रन्थ कालकाचार्य कथानक में कहा गया है कि शकों में जागीरदारों को 'षाहि' तथा उनके अधिपतियों को 'षाहानुषाहि' कहा जाता था।
- कुषाण शासक 'रजतिराज' की उपाधि धारण करते थे जो सामन्तवादी व्यवस्था की ओर संकेत करता है । कालान्तर में इसी का रूपांतरण 'महाराजाधिराज' हो गया जो भारतीय सम्राट धारण करते थे ।